International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 09-09-2024, Accepted: 10-10-2024, Published: 25-10-2024
Volume 6, Issue 2, 2024, Page No. 38-41

बंजारा महिलाओं की सामाजिक शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन (मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के विशेष संदर्भ में)

मुकेश राठौर, डॉ0 शीतल झा
सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन अध्ययन शाला विभाग, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर और सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डॉ. अम्बेडकर नगर, महू, इन्दौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
इस प्रस्तुत शोध आलेख में बंजारा महिलाओं की सामाजिक शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के विशेष संन्दर्भ में किया गया है। जिसमें बंजारा समुदाय अपनी परंपराओं और रीति–रिवाजों के साथ गांव से बाहर रहते हुये अपनी विरासत से विमुख नहीं है। जो लगातार पलायन और आपराधिक जनजातियों के कलंक के कारण बंजारा समुदाय भौगोलिक रूप से अलग–थलग तो है। परंतु बंजारा समुदाय की महिलाओं और बच्चों के साथ पलायन करते हुए। जिस सामाजिक शैक्षिक चुनौतियों का सामना पलायन करने से होती है। वह बंजारा लोगों के जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। यह समुदाय की शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका को प्रभावित ही नहीं करता है बल्कि समुदाय का साक्षरता स्तर बहुत कम हो गया है। पारंपरिक नौकरियों और आय के स्रोत को खोने से टांडा सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। परिवार और बच्चों की मुख्य संचालिका में महिलाएं खुद को सबसे ज्यादा नुकसान की स्थिति में पाती हैं। बंजारा महिलाओं से संबंधित साहित्य और महत्वपूर्ण वास्तविकताओं की समीक्षा में देखा गया है कि बंजारा समुदाय में महिलाओं की स्थिति टांडा–दर–टांडा अलग–अलग है। पिछले कुछ दशकों में क्षेत्र या अर्थव्यवस्था के विकास में उनकी भूमिका को काफी हद तक नियंत्रित किया गया है। शुरुआती दिनों में, महिलाओं को पत्नियों के रूप में देखा जाता था, जिन्हें खाना बनाना, साफ–सफाई करना और बच्चों की देखभाल करना माना जाता था। इसे घरों और टांडा में समझा जा सकता है; एक महिला एक गृहिणी और देखभाल करने वाली से ज्यादा कुछ नहीं थी। महिलाओं के पास कोई निजी विचार नहीं था, कोई आवाज़ नहीं थी, और कोई आज़ादी नहीं थी। उन्हें पुरुषों की सामाजिक मान्यताओं ने कुचल दिया। एक महिला का उपयुक्त स्थान हमेशा एक पुरुष के मर्दाना ढांचे के पीछे था। हालांकि, महिलाएं बहुत सारे काम करती हैं जहां कृषि मुख्य व्यवसाय है। अक्सर उन्हें सही मायने में खेत वाली महिला कहा जाता है। जैसा कि देखा जाता है, महिलाएं आमतौर पर दो तरह के काम करती हैं, एक जो आय उत्पन्न करता है और दूसरा जो कोई आय उत्पन्न नहीं करता है। पहला घर के बाहर का काम है जिसके लिए उसे भुगतान किया जाता है; और दूसरा आर्थिक गतिविधि नहीं माना जाता है, क्योंकि यह भुगतान वाला काम नहीं है। घरेलू काम जैसे खाना बनाना, सफाई करना और बच्चों की देखभाल, पशुओं का रखरखाव, ईंधन, चारा, पानी और वन उपज आदि इकट्ठा करना घर में महिलाओं द्वारा किया जाने वाला अवैतनिक श्रम है। परिवार अपनी आय को किस तरह खर्च करता है, इसमें उनकी बहुत कम या कोई भूमिका नहीं होती है। वैसे तो बंजारा महिलाओं की रंगीन जिंदगी उनकी बाहरी दुनिया की तरह दिखती है, लेकिन तांडा और घर के अंदर उन्हें हर तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इस शोध के माध्यम से शोधकर्ता ने बंजारा महिलाओं की सामाजिक शैक्षिक समस्याओं को मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के विशेष संन्दर्भ में किया गया है जो खरगोन जिला की छह जनपद पंचायतों– झिरन्या, भीकनगावं, भगवानपुरा, बडवाह ब्लॉक, गोगावां, महेश्वर में से प्रत्येक जनपद पंचायतों में बंजारा समुदाय की महिलाओं की सामाजिक शैक्षिक समस्याओं पर केन्द्रित अध्ययन है।

मूल्य शब्दः बंजारा महिलाऐं, सामाजिक शैक्षिक समस्याऐं, खरगोन जिला

बंजारा ऐतिहासिक जनजातियों में से एक है जो जातीय रूप से अलगाव, अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं, त्योहारों, व्यंजनों, नृत्य और संगीत से पहचानी जाती हैं। यह जनजाति महत्वपूर्ण रूप से ऐसी रहस्यमय संस्कृति और आतिथ्य और विषम पितृसत्तात्मक और मातृसत्तात्मक समाज रखती है। यह एक स्वदेशी और लोकप्रिय जातीय जनजाति है, जिसे देश के विभिन्न हिस्सों में अलग–अलग नामों से भी जाना जाता है, जैसे गोर, गौर बंजारा, लामन, लंबानी, लंबाडी, गौर राजपूत, नायक, बलदिया और गौरिया। वे मुख्य रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात, मध्य प्रदेश, ओडिशा और पश्चिम बंगाल राज्यों में वितरित हैं और पूर्वोत्तर राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को छोड़कर अन्य सभी राज्यों में रहते हैं। गोर बंजारे अपनी अलग भाषा बोलते हैं जिसे बंजारा के नाम से जाना जाता है जिसे श्गौर बोली, लमानी या लंबाड़ी या गोरमाटी या बंजारी भी कहा जाता है। उनके पास मौखिक साहित्य और परंपराएँ हैं, लेकिन उनकी भाषा की लिपि न होने के कारण उनके पास कोई लिखित साहित्य नहीं है। चूँकि उनका इतिहास और परंपराएँ लिखित रूप में नहीं हैं, इसलिए इतिहासकारों और सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए उनके अतीत का वृत्तांत लिखना मुश्किल हो गया है। ऐसा कहा जाता है कि आर्यन प्रवास तक का उनका बाद का इतिहास भी अस्पष्टता में डूबा हुआ है, क्योंकि इतिहास और संस्कृति की पुस्तकों में उनके बारे में बहुत अधिक चर्चा नहीं की गई और उनके बारे में कोई महत्वपूर्ण साक्ष्य नहीं मिले, हालाँकि वे बाद के प्रागैतिहासिक काल से बचे हुए हैं।

भारतीय बंजारा समुदाय की पराम्परिक समण संस्कृति

बंजारा समुदाय की पराम्परा को समझना है तो सबसे पहले उनके इतिहास को समझना होगा मध्य भारत का केन्द्रीय राज्य मध्यप्रदेश में बंजारा संस्कृति को अलग अलग हिस्सों में बांटकर अध्ययन किया जा सकता है।

1. **संस्कृतिः** गौर बंजारा लोगों का एक अनूठा सांस्कृतिक जीवन और प्रथाएं हैं जो उन्हें दूसरों से अलग करती हैं। उनकी अपनी भाषा, खान–पान की आदतें, शरीर पर गोदना, पोशाक और आभूषण, कला और नृत्य तथा त्यौहार और समारोह भी हैं, जिन्होंने उनकी संस्कृति को आकार दिया है। गोर बंजारा संस्कृति में उनकी भाषा, वेशभूषा, विवाह रीति–रिवाज, उत्सव, लोक और प्रदर्शन कलाएं और उनके द्वारा अर्जित कई अन्य क्षमताएं शामिल हैं। उनकी संस्कृति

अपनी भाषा और व्यवसायों के साथ अन्य जनजातियों से अलग और भिन्न प्रतीत होती है। उनकी अपनी भाषा है जिसे बंजारा, ब्रिंजारी या गोरमाटी कहा जाता है और उनकी अपनी एक अलग और विशिष्ट संस्कृति है। कुछ दक्षिणी भारतीय बंजारे घर घर एर पूजा नामक एक विशेष पूजा मनाने की परंपरा का पालन करते हैं, जिसमें बंजारे तुलजाभवानी देवी और मरियम्मा देवी की पूजा करते हैं और पशु बलि चढ़ाते हैं और पूरी रात देवताओं की पूजा करते हैं और सभी रिश्तेदारों को भोज के लिए आमंत्रित करते हैं।

2. **भाषाः** बंजारे गौर बोली बोलते हैं; इसे लम्बाडी, बंजारी भी कहा जाता है, यह इंडो–आर्यन भाषा समूह से संबंधित है। लम्बाडी की कोई लिपि नहीं होने के कारण इसे या तो देवनागरी लिपि में लिखा जाता है या फिर तेलुगु या कन्नड़ जैसी स्थानीय भाषा की लिपि में। आज बहुत से बंजारे द्विभाषी या बहुभाषी हैं, जो अपने आस–पास की प्रमुख भाषा को अपनाते हैं, लेकिन जो बंजारा घनी आबादी वाले क्षेत्रों में रहते हैं, वे अपनी पारंपरिक भाषा ही अपनाते हैं। गोर बंजारों की अपनी मातृभाषा है जिसे 'गोरबोली', बंजारी कहते हैं और यह पूरे भारत में रहने वाले लोगों द्वारा बोली जाती है। उनके नाम के अनुसार उनकी भाषा को कई नामों से भी जाना जाता है जैसे, लमनी, लम्बाडी, लम्बानी, ब्रिंजारी, गौरमती, बंजारा, लुभानी और अन्य। क्षेत्रीय बोलियाँ एमएच (देवनागरी लिपि का उपयोग करके मराठी और हिंदी में लिखी जाती हैं), के (कन्नड़ लिपि में लिखी जाती हैं), एपी और टीएस (तेलुगु लिपि में लिखी जाती हैं) के बंजारों के बीच विभाजित हैं। वे द्विभाषी हैं और अपनी मातृभाषा गोरबोली के साथ हिंदी या मराठी या कन्नड़ या तेलुगु बोलते हैं, लेकिन उनकी श्बंजारोंश की भाषा पर क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव है। इस प्रकार गोरबोली बोलने वालों की वास्तविक संख्या ज्ञात नहीं है क्योंकि पिछले कई वर्षों से भाषा के आधार पर जनगणना नहीं की जा रही है। बंजारों की राज्यवार जनगणना भी उपलब्ध नहीं है क्योंकि उन्हें भारत के विभिन्न राज्यों में विभिन्न श्रेणियों के तहत सूचीबद्ध किया गया था, हालाँकि वे पूरे भारत में रहते हैं। हालाँकि, अनौपचारिक स्रोतों के आधार पर, उनकी अनुमानित जनसंख्या 4 करोड़ से अधिक है। गोरबोली की कोई लिपि नहीं है, लेकिन उनके पास प्रचुर मात्रा में मौखिक साहित्य है, जो भी अधिक दर्ज नहीं है, और पिछले कई शताब्दियों से उनके पास कोई लिखित साहित्य नहीं बचा है। हालाँकि, बंजारे अपनी भाषा और मौखिक परंपराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से स्थानांतरित करके बनाए रख रहे हैं। दूसरी ओर, उनकी भाषा और साहित्य आधुनिकीकरण और उनके आसपास के बाहरी समाजों के प्रभाव के कारण कम होने का खतरा है। इसलिए, बंजारों की बंजारा भाषा की स्थिति का अध्ययन करने और एक लिपि अपनाने और बंजारों की भाषाई पहचान की रक्षा करने की संभावनाओं को तलाशने की तत्काल आवश्यकता है।

3. **कलाः** बंजारा कला में नृत्य और संगीत जैसी प्रदर्शन कलाएँ शामिल हैं, साथ ही रंगोली, कपड़ा कढ़ाई, गोदना और पेंटिंग जैसी लोक और प्लास्टिक कलाएँ भी शामिल हैं। बंजारा कढ़ाई और गोदना विशेष रूप से बेशकीमती हैं और बंजारा पहचान का एक महत्वपूर्ण पहलू भी हैं। लम्बानी महिलाएँ लेपो कढ़ाई में माहिर हैं, जिसमें कपड़ों पर दर्पण, सजावटी मोतियों और सिक्कों के टुकड़े सिलना शामिल है। संदुर लम्बानी कढ़ाई एक प्रकार की कपड़ा कढ़ाई है जो कर्नाटक के बेल्लारी जिले के संदुरू में जनजाति के लिए अद्वितीय है। इसे जीआई टैग प्राप्त हुआ है।

4. **रीति रिवाजः** बंजारा लोग श्रावण (अगस्त का महीना) के दौरान तीज का त्यौहार मनाते हैं। इस त्यौहार में युवा अविवाहित बंजारा लड़कियाँ अच्छे वर की कामना करती हैं। वे बांस के कटोरे में बीज बोती हैं और नौ दिनों तक दिन में तीन बार पानी देती हैं और अगर अंकुर मोटे और ऊँचे उगते हैं तो इसे एक अच्छा शगुन माना जाता है। तीज के दौरान अंकुर–टोकरियों को बीच में रखा जाता है और लड़कियाँ उनके चारों ओर गाती और नाचती हैं।

5. **नृत्य और संगीतः** अग्नि नृत्य, घुमर नृत्य और चरी नृत्य बंजारों के पारंपरिक नृत्य रूप हैं। बंजारों के गायकों का एक बहन समुदाय है जिसे दधी या गजुगोनिया के नाम से जाना जाता है। वे पारंपरिक रूप से सारंगी की संगत के साथ गीत गाते हुए गाँव–गाँव घूमते हैं।

6. **धर्मः** सभी बंजारा लोग समण सन्त सेवा लाल पर आस्था रखते हैं और समण संस्कृति का पालन करते हैं। वे सिख समण सन्तों के खालसा पंथ को मानते है कुछ तो हिन्दू मत में विश्वास रख्ते है जैसे बालाजी, देवी जगदम्बा देवी, देवी भवानी, माहुर की रेणुका माता और हनुमान देवताओं की पूजा करने के लिए जाने जाते हैं। वे गुरु नानक का भी बहुत सम्मान करते हैं। असल में बंजारा धर्म में इस पर स्पष्ट मत अभी तक नहीं बना है परंतु बंजारे धर्म के संबंध में अस्पष्ट रहे हैं कि हम आदिवासी की तरह प्रकति पूजक है। कुछ बंजारे जो बरार के वुन जिले में बस गए थे, उन्होंने स्थानीय ब्राह्मणों पुरोहित की बजाय अपने समण सन्तों से ही पूजा पाठ कराना पसंद करते है।

भारतीय बंजारा समुदाय की समस्या

बंजारा समुदाय में महिलाओं सामाजिक एवं शैक्षणिक विकास की स्थिति में शिक्षा का प्रचार प्रसार बंजारा समुदाय में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा विशेष कार्यक्रम चलाएं जा सकते है और महिलाओं और लड़कियों के लिए निशुल्क शिक्षा और छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जा सकती है। उनके लिए वयस्क शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से निरक्षर महिलाओं को साक्षर बनाने का प्रयास किया जा सकता है। स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धताः बंजारा समुदाय में मोबाइल क्लिनिक और स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जा सकता है। गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था की जा सकती है। स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाएं ताकि महिलाएं स्वास्थ्य संबंधी जानकारी उनके बीच प्राप्त किया जा सके। बंजारा समुदाय में महिलाओं में समाजिक समास्या में परिवार में निणर्य लेने में भागीदारी का अभाव है। पर अन्य सामाजिक जीवन की प्रगति में जैसे–रोजगार के रूप उन्हें खेती मजदूरी तक सीमित है, पुरूष सत्तात्मक पूर्वाग्रही सोच की सामाजिक समस्या, बेटे बेटी के पालन पोषण में लैंगिक भेद की समस्या, बंजारा महिलाए

पुरूष पर पूर्णतः आश्रिता है, धार्मिक रूढ़वादी जैसी बलि प्रथाओं में अंधविश्वास की समस्या, समण सन्त सेवालाल की शिक्षाओं से सुधार हो सकता क्योंकि उनको सांस्कृतिक केन्द्र मानते है। घर से स्कूल की दूरी होने से ज्यादातर लड़कियों को पढ़ने बाहर भेजे जाने, समाजिक रूढ़ीवादी सोच है कि लड़किया अधिक पढ़ने से अन्तजातीय विवाह करेगी इसलिए मत बढ़ाओं, बंजारा परिवार आर्थिक स्थिति की वजह से नहीं पढ़ा पाना, लड़की तो ब्याह के बाद दुसरे के घर जायेगी चूल्हा चक्की ही करेगी इसलिए नहीं पढ़ाते, घर के कामकाज में खेतीबाड़ी में पढ़ने के बाद काम नहीं करते इसलिए सोच के नहीं पढ़ाते है।

खरगोन जिले में बंजारा महिलाएं

खरगोन जिले में बंजारा महिलाएं कई समस्याओं का सामना करती हैं, जिनमें प्रमुख हैं।

- **शिक्षा की कमी:** बंजारा समुदाय में महिलाओं की शिक्षा का स्तर काफी कम है, जिससे उन्हें रोजगार के अच्छे अवसर नहीं मिलते। स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी कई बंजारा महिलाएं स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण स्वास्थ्य समस्याओं से जूझती हैं। सामाजिक भेदभाव उन्हें समाज में भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनके आत्म–सम्मान और विकास पर असर पड़ता है। आर्थिक असुरक्षा, रोजगार के स्थायी अवसरों की कमी के कारण आर्थिक असुरक्षा बनी रहती है।

- **सामाजिक दबाव:** बंजारा महिलाएं सामाजिक और पारिवारिक दबावों का सामना करती हैं, जो उनके जीवन को कठिन बनाता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक सहायता के कार्यक्रमों की आवश्यकता है। सामाजिक समस्याओं में अध्ययनल किया जाये तो प्रारंभिक काल में पुरुष और महिला के बीच अनुपात बराबर था लेकिन वर्तमान परिदृश्य में, पुरुष जनसंख्या महिलाओं की तुलना में अधिक है, आधुनिकीकरण और प्रौद्योगिकी के उपयोग ने पुरुष–महिला के समान अनुपात को प्रभावित किया है। बंजारा तांडों में लड़की की शादी की उम्र बदल रही है। वे इस तथ्य को स्वीकार कर रहे हैं कि लड़कियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए उम्र पर विचार किया जाना चाहिए, लड़कियों की शादी के लिए औसत आयु 18 से 20 वर्ष में की जाती है। समय के साथ परिवार का स्वरूप संयुक्त परिवार से एकल परिवार में बदल गया है। बंजारा लोगों के पास स्थायी विरासत के रूप में जमीन है, जो पहले नहीं थी; इस बंदोबस्ती ने लोगों के स्थायी पलायन को रोका। समुदाय आजीविका के लिए एक ही स्रोत पर निर्भर नहीं है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की परंपरा अभी भी नहीं बदली है। बंजारा लोग आजीविका के विकल्पों के लिए पलायन करते हैं; वहां भी उन्हें अच्छी आय, स्वास्थ्य और शैक्षिक सुविधाएं मिलने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, और नए स्थान पर निवास का कोई आश्वासन नहीं होता है। ज्यादातर महिलाओं ने जवाब दिया कि शराब की लत और परिवार में वित्तीय तनाव घरेलू हिंसा का कारण बनता है। बंजारा समुदाय में मेले और देवताओं की पूजा बहुत महत्वपूर्ण है। लोग शिक्षा पर खर्च करने से ज़्यादा पैसा देवताओं की पूजा पर खर्च करते हैं। जबकि शैक्षिक स्थिति के अध्ययन करने में जो खरगोन जिले के विशेष संन्दर्भ में देखने को मिलता है। वह है शिक्षा संबंधी चुनौतिया जिसमें आर्थिक संकटों और आजीविका के विकल्प की अनिश्चितता के साथ–साथ पलायन की वजह से उच्च शिक्षा में भाग लेने वाली लड़कियों का अनुपात बहुत खराब है। बंजारा समुदाय में प्राथमिक विद्यालय से शिक्षा छोड़ने की दर प्रचलित है। डेटा एकत्र करते समय कुछ कारण दिए गए थे। पहला और सबसे महत्वपूर्ण कारण परिवार का समर्थन करना था। जैसा कि अध्ययन में पाया गया कि सभी उत्तरदाताओं ने बताया कि उच्च अध्ययन में भाग लेने वाली लड़कियों का प्रतिशत बहुत कम है। कि परिवार लड़कियों को शिक्षित करने में सक्षम नहीं है। बंजारा समुदाय की लड़कियों की खराब शैक्षिक स्थिति का एक प्रमुख कारण विवाह है, लड़कियों को शिक्षित करने का अर्थ है दहेज के लिए लड़के से अधिक उम्मीदें और लड़की से अच्छे लड़के की अधिक उम्मीदें। विवाह के अलावा खराब आर्थिक स्थिति, गांव में स्कूल के बुनियादी ढांचे की कमी और सामाजिक असुरक्षा अन्य कारण हैं। टांडा के पलायन ने बच्चों की शिक्षा को बुरी तरह प्रभावित किया है।

सामाजिक शैक्षिक समस्याओं का विश्लेषण

- **शिक्षा का प्रचार–प्रसार:** बंजारा समुदाय में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा विशेष कार्यक्रम चलाएं जा सकते है और महिलाओं और लड़कियों के लिए निशुल्क शिक्षा और छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जा सकती है। उनके लिए वयस्क शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से निरक्षर महिलाओं को साक्षर बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

- **स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता:** बंजारा समुदाय में मोबाइल क्लिनिक और स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जा सकता है। गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था की जा सकती है। स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाएं ताकि महिलाएं स्वास्थ्य संबंधी जानकारी उनके बीच प्राप्त किया जा सके।

- **आर्थिक सशक्तिकरण:** स्वयं सहायता समूह और माइक्रोफाइनेंस कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान किया जा सकता है। महिलाओं के लिए कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाएं ताकि वे आत्मनिर्भर बनाया जा सके। बंजारा महिलाओं के हस्तशिल्प और अन्य उत्पादों के लिए बाजार उपलब्ध कराएं।

- **सामाजिक जागरूकता:** समाज में महिलाओं के अधिकारों और उनके महत्व के बारे में जागरूकता फैलाएं। बंजारा समुदाय के भीतर और बाहर सामाजिक भेदभाव और पूर्वाग्रहों को कम करने के लिए अभियान चलाएं।

- **सरकारी नीतियों और योजनाओं का लाभ:** बंजारा महिलाओं को सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और लाभों के बारे में जानकारी प्रदान किया जा सके।महिलाओं को सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए आवश्यक दस्तावेज और प्रक्रियाओं में मदद करें।

- **स्व–रोजगार के अवसर:** महिलाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर पैदा करने के लिए सूक्ष्म और लघु उद्यमों को प्रोत्साहित करें। कृषि, हस्तशिल्प, और सेवा क्षेत्र में महिलाओं को शामिल करने के लिए योजनाएं बनाएं। परिवार में निणर्य लेने में भागीदारी का अभाव, रोजगार के रूप उन्हें खेती मजदूरी तक सीमित है। पुरूष सत्तात्मक पूर्वाग्रही सोच की सामाजिक समस्या, बेटे बेटी के पालन पोषण में लैंगिक भेद की समस्या, बंजारा महिलाए पुरूष पर पूर्णतः आश्रिता है, धार्मिक रूढ़वादी जैसी बलि प्रथाओं में अंधविश्वास की समस्या, समण सन्त सेवालाल की शिक्षाओं से सुधार हो सकता क्योंकि उनको सांस्कृतिक केन्द्र मानते है।

निष्कर्ष

बंजारा महिलाएं कई समस्याओं का सामना करती हैं, जिनमें प्रमुख हैं– जैसे कि शिक्षा की कमी बंजारा समुदाय में महिलाओं की शिक्षा का स्तर काफी कम है, जिससे उन्हें रोजगार के अच्छे अवसर नहीं मिलते। स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी कई बंजारा महिलाएं स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण स्वास्थ्य समस्याओं से जूझती हैं। सामाजिक भेदभाव उन्हें समाज में भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनके आत्म–सम्मान और विकास पर असर पड़ता है। आर्थिक असुरक्षा रोजगार के स्थायी अवसरों की कमी के कारण आर्थिक असुरक्षा बनी रहती है। सामाजिक दबावरू बंजारा महिलाएं सामाजिक और पारिवारिक दबावों का सामना करती हैं, जो उनके जीवन को कठिन बनाता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक सहायता के कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

संन्दर्भ सूची

1. भंडवलकर, वी. (2012, नवंबर)। खानाबदोश और विमुक्त जनजातियाँ।
2. भिड़े, ए. (1981). महाराष्ट्र में खानाबदोश और विमुक्त जनजातियों के बीच महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों का एक अध्ययन। बॉम्बे।
3. बर्मन, जे.जे. (2010). एक विमुक्त जनजाति की नृवंशविज्ञानः लामन बंजारा। नई दिल्लीः मित्तल प्रकाशन।
4. देवी, जी. एन. (2006). एक खानाबदोश जिसे चोर कहा जाता हैः आदिवासी चुप्पी पर विचार। दिल्लीः ओरिएंट लॉन्गमैन।
5. डी. सूजा, डी. (2001). ब्रांडेड बाय लॉः लुकिंग एट इंडियाज डिनोटिफाइड ट्राइब्स. पेंगुइन बुक्स इंडिया.
6. हलबार, बी.जी. (1986). लमानी अर्थव्यवस्था और समाज में परिवर्तन। दिल्लीः मित्तल प्रकाशन।
7. काले, के.एस. (1994). कोल्हात्याच पोर. मुंबईः ग्रंथाली प्रकाशन.
8. कोठारी, सी.आर. (2004). अनुसंधान पद्धतिः विधियाँ और तकनीकें (दूसरा संशोधित संस्करण) . नई दिल्लीः न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स.
9. माने, एल. (1980). उपरा. मुंबईः ग्रंथाली प्रकाशन.
10. मोहन, एन.एस. (1988). भारत में बंजारा महिलाओं की स्थितिः कर्नाटक का एक अध्ययन. उप्पल पब्लिशिंग हाउस.
11. नाइक, बी.एस. (1983). आंध्र प्रदेश के बंजारा (लम्बाडी) समुदाय में बदलाव में महिलाओं की स्थिति और भूमिका. भारतीय मानवविज्ञानी.
12. नाइक, आर. (1983). बंजारा जामातिची समाजवादी सामाजिक आर्थिक पाहानी। औरंगाबाद.
13. नाइक, वी.एस. (1996). जन्म से लेकर विवाह के माध्यम से वैवाहिक घर तकः आंध्र प्रदेश में लम्बाडी (बंजारा) महिलाओं का पारंपरिक जीवन चक्र। भारतीय मानवविज्ञानी, 28–29.
14. पवार, ए., नाइक, पीए, और राठौड़, एसजे (2012)। पिछले शोध के साहित्य का संक्षिप्त अवलोकनः भारत में बंजारा समुदाय। वैश्विक शोध विश्लेषण, 101–102।
15. प्रेस सूचना ब्यूरो। (2015)। विमुक्त, घुमंतू और अर्ध–घुमंतू जनजातियों के लिए राष्ट्रीय आयोग। नई दिल्लीः सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार।
16. राठौड़, के. (1978). बंजारा समाजच्य आर्थिक समस्याः एक दृष्टिक्षेप।
17. राठौड़, एम. (2000). विमुक्त और घुमंतू अधिकार कार्य समूह समाचार पत्र। वडोदरा, भारतः विमुक्त और घुमंतू अधिकार कार्य समूह।
18. राठौड़, एम. (2001). गोर बंजारों का प्राचीन इतिहास। बंजारा टाइम्स से लिया गयाः www.Banjaratimes.com
19. राठौड़, एम. (2003). गोर–बंजारा जन जाति का इतिहास। कानपुरः विद्या प्रकाशन.
20. राठौड़, टी. (2008)। कर्नाटक में बंजारा समुदाय के सामाजिक–आर्थिक मुद्देः विकास के लिए पुनर्परिभाषित रणनीति। बंजारा समुदाय की वर्तमान स्थिति और भविष्य की चुनौतियाँ। धारवाड़, कर्नाटक।
21. रेनके, बी. (2008). विमुक्त, घुमंतू और अर्ध–घुमंतू जनजातियों के लिए राष्ट्रीय आयोग. नई दिल्लीः सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार.
22. परमार जबरसिंह (2013)' म.प्र दिग्दर्षन , भोगोलिक परिवेश, अर्थव्यवस्था, कला एवं संस्कृति
23. राठौड़, मोतिराज, (2003) गौर बंजारा जनजाति का इतिहास, विद्याप्रकाषन सी–499 गुजयानी कानपूर 208022।
24. सिंह के.एस.(1999) द शेड्यूल कास्ट 123–134।
25. नाइक, वाई रूपला, (1998), युग के माध्यम से रंगारंग बंजारा (लंबानी) जनजाति, एसबीसी कानून प्रकाषन, 360/ए कविता इमारतें, 1 मेन रोड़ यषवंतपुर बेंगलौर–560022 कर्नाटक।
26. सिंह के.एस (1994) द शेड्यूल ट्राइब्स
27. प्रिती तनेजा, 1992, अप्रवासी बंजारा आदिवासीयों की दो बस्तियों के बीच तुलनात्मक अध्ययन, स्वास्थ्य व टीकाकरण कार्यक्रम के विशेष संदर्भ में,।
28. देब, पी सी, बाबुराम तथा जोगिंदर लाल,(1987) पंजाब के बाजीगरर्सः एक सामाजिक आर्थिक अध्ययन, मित्तल प्रकाशन, बी–2/19 बी, लॉरेंस रोड़, दिल्ली–110035
29. शर्मा, श्रीराम, (1983), बंजारा समाज, दक्षिण प्रकाशन, हैदराबाद।
30. राठौड़ मोतीराज (1976) बंजारा संस्कृति, औरंगाबाद प्रकाशन महाराष्ट्र।
31. लमानी, एच डी, (1976) कर्नाटक के लंबानी लोकगीतः एक अध्ययन, अप्रकाषित थीसीस, कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़।
32. एरिक, पुष्पलता (1975), बंजारा लोकगीत समूह, शिवाजी विश्वविद्यालय, लोलाहापुर।
33. राठौड़, ए लालकृष्ण, (1971) लंबानी भाषा और साहित्य और राजस्थानी और हिन्दी से उसका संबंध, अप्रकाषित थीसीस कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़।
34. नाइक, रंजीत, (1966) अखिल भारतीय बंजारा सेवक सीबीर, अखिल भारतीय बंजारा सेवक संघ प्रकाशन
35. राठौड़, बलीराम,(1936) बंजारा इतिहास, सुबोध पुस्तक प्रकाशक, अमरावती यवतमाल महाराष्ट्र
36. जाधव, काषीराम, आधुनिक बंजारा गीत, बंसत नगर प्रकाशन, महाराष्ट्र
37. सिंह के.एस.(1999)द शेड्यूल कास्ट 123–134।
38. बर्मन, जे जे रॉय (2010)। एक विमुक्त जनजाति की नृवंशविज्ञानः लमन बंजारा । मित्तल प्रकाशन। पी। 94. आईएसबीएन 978–8–18324–345–2.
39. नाइक, धनसिंग बी. (2000). बंजारा लम्बानिस की कला और साहित्यः एक सामाजिक–सांस्कृतिक अध्ययन । अभिनव प्रकाशन। आईएसबीएन 978–8–17017–364–9.
40. यशवंत जाधव (2022) बनजारा जाति समाज और संस्कृति वाणी प्रकाशन
41. श्रीराम शर्मा (2019) बनजारा समाज किंडल संस्करण
42. आत्माराम कनीराम राठोड (2019) गोर बंजाराः इतिहास व लोकजीवन, मराठी संस्करण
43. trijharkhand.in/en/banjara